श्री गणेशाय नमः

आरती

श्री शिव शंकर जी महाराज

दिन

मिलने का पता :-

हीरा लाल अबरोल

मण्डी बाज़ार, जम्मू

मूल्य :-
शिव चरणों में श्रद्धा

अमर आर्ट प्रेस, मोती बाज़ार, जम्मू—फोन : 5786

[1]

जय गणेश गणनाथ दयाल जी सकल बिघ्न करो दूर हमारे।
प्रथम जो कोई तुम को ध्यावे तिस के पूर्ण कार्य सं[illegible]।
लम्बोदर गज बदन मनोहर कर त्रिशूल परशुवर धा[illegible]।
ऋद्धि सिद्धि दौऊ चंवर झुलावे मूषक वाहन चरण सुहावे।
ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मन में ऋषि मुनि गुणी सब दास तुम्हारे।
ब्रह्मानन्द सहाय करो निज भक्त-जनों के तुम रखवारे।

[2]

गणपत की सेवा मंगल मेवा सेवा से सब विघ्न हरे।
तीन लोक तेतीस देवता द्वार खड़े सब अर्ज करें।
ऋद्धि सिद्धि दक्षिण वाम विराजें और आनन्द से चवर करें।
धूप दीप से करत आरता भक्त खड़े जय जय कार करें।
गुड़ के मोदक से भोग लगत है मूषक वाहन चढ़या करें।
सोम रूप से हे गणपत जी विघ्न कष्ट सब दूर करे।

गणपत की सेवा—

[3]

जय शिव ओंकारा स्वामी हर भज ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव भाले नाथ महा शिव।

अर्धाङ्गी गौरा, ओं हर हर महादेव।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे। ओं हर०
दो भुज चार चर्तुभुज दस भुज तुम सोहे।
तेरो रूप निरन्तर त्रिभुवन जग मोहे। ओं हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर वागाम्बर अंगे।
सनकादिक कृपलादिक भूतादिक संगे ओं हर०
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी।
चंदन मृग मधुलेपन भोले शशि धारी। ओं हर०
कर मध्य करमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
दुख हरता सुख करता दुख निश्चय हरता। ओं हर०
गायत्री पावती लक्ष्मी वर संगे।
पार्वती अर्धांगी शिव गौरां संगे। ओं हर०
ब्रह्मा-विष्णु सदा शिव तीनों एक सरूपा अंतर न कर सों।
मन मांगत फल पावत भव सागर तर सों। ओं हर०
सच्चिदानंद सरूपा त्रिभुवन के राजे।
चारों वेद उच्चारे बन बन के राजे। ओं हर०
हाथों में कंगन कानों में कुण्डल गले मोतियन माला।
जटों में गंग विराजे ओढ़त मृगशाला। ओं हर०
चौसठ योगन मंगल गावे नृत्य करत भैरों।
बाजे ताल मृदंगा और बाजे डमरू। ओं हर०

काशी में विश्वानाथ विराजे नंदा ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावे महिमा अति भारी। ओं हर०
शिव जी की आरती निश दिन जो गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मन इच्छा फल पावे। ओं हर०
मात पिता तुम मेरे मैं शरण पड़ूं किसकी।
तुम विन और न दूजा आस करूं जिसकी। ओं हर०
पार्वती पर्वत में बस रही शंकर कैलाशा।
अक्क धतूर के भोजन भस्मी है वासा। ओं हर०

[4]

पक्षपात तज शरण पड़ा हूं मैं तेरो पड़ा हूं प्रभू तेरी।
अजी कैलाशपति तुम पत राखो मेरी।
ईश्वर रूप तू है सुर नर मुनि सब ध्यावे।
वेद शास्त्र यह बार बार फरमावे।
एको ही ब्रह्मा विष्णु महेश कहावे।
परम ज्योति से सभी प्रकट हो जावे।
विष्णु जपी तोहे विष्णु जपन विन देरी भोले कैलाशपति।
सकल सृष्टि का करते हो संहारा।
जटा जूट से निकली गंगा की धारा।
त्रिशूल से करते हो दुष्टों का निस्तारा।
भक्तों को देत हो तुम्हीं मुक्ति द्वारा।

गावे तुझे सब साधु मुनि और गौरी।
मसा मुनि योगी, भोले कैलाशपति तुम पत राखो मोरी।
निराला जो शिव जी ने अपना ले ठोर बनाया।
कैलाश पर आसन प्रेम ज़माया, पृतपाला से सकल सेह।
यज्ञ रचाया घास पात से अपना मन परचाया।
खावें ले अक धतूरा ले भंग की ढरी, भोले कैलाशपति।
ताड़ी लगावें शिव आसन बिछाये, मृगशाला बिछावे।
मृगशाला। अजी डिम डिम डमरू बाजे रहे उजाला।
तीन नयन मस्तक पर चन्द्रमुहारा रारे मुद्रा शेषनाग रुण्डमाला।
तेरी शरण में नित मैं आया। भोले०
सोमवार जो शिव मन्दिर में आवे
अजी ज्ञान प्रीति से धूप और दीप जलावे
विल्लपत्र दल पुष्प और और पान चढ़ावे
ऋद्धि सिद्धि नौ निध परम गति पावे
कर दण्डवत् और परिक्रमों की फैरी। भोले०
शिव रात्रि का व्रत जो जन करते हैं जो जन करते
शिव-स्मरण में सकल रहन हो जाते
मिले मुक्ति वह अटल रहन नहीं मरते नहीं जमते
बार बार नहीं जन्म जाल में फंसते
दास की सुनियो अनाथ की सुनियो
अर्ज यही इक मेरी। भोले०

[5]

जय शंकर कैलाशपति शिव पूर्ण ब्रह्म सदा अविनाशी।
अंग विभूत गले रुण्ड माला शीश जटा गंग विलाशी।
चन्द्र कला मस्तक पर शोभे तीन नयन त्रैलोक के वासी।
कर त्रिशूल पहरे मृगशाला संग बसे गिरिजा नित दासी।
शिवशिवशिवशिव नाम सिमर नर सकल मनोरथ पूर्णकारी।
भक्त जनों के संकट हारी शिव शंकर भोले भंडारी।
रावण नाम लियो दृढ़ मन से सकल देव आज्ञा सिर धारी।
नन्दीगण जब सिमरण कीनो काल पाश तत्काल निवारी।
उपमन्यु मुनि करि तपस्या दूध समुद्र कियो बड़ो भारी।
भक्त तुम्हारे यही वर मांगे भक्ति दान दीजो भण्डारी।

[6]

शिव हर शंकर गौरी शाम, बन्दे गंगा धारणी श्याम।
शिव रुद्र पुष्पवती विश्वानाथ, कलहर काशी पूर्णनाथ।
भज अपार लोचन, परमानन्दा नील कण्ठा तुम शरण।
शिव असुर निकञ्जन भव दुख भञ्जन सेवा के प्रतिपाला।
भव आवागवन मिटा दो शंकर भज शिव बारम्बार:।

[7]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भूजगेण्द्रहारम्।
सदा वसत हृदयारबिन्दे, भवं-भवानी सहितं नमामि।

[8]

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं
विभु व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपमं ।
अजं निर्गुण निर्विकल्प निरीह
चिदाकारमाकाशवासं भजेऽहम् ।
निराकारमोंकारमुल तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीश गिरीशम् ।
कराल महाकाल काल कृपाल
गुणाकारसंसारपारं नतोऽहम् ।
तुशाराद्रिसंकाशगौर गम्भीर
मनोभूतकोटिप्रभाश्री शरीरम् ।
स्फुरण्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा
लसदांलबालेन्दुकएठे भुजङ्गाँ ।
चलत्कुएड़लं शूभ्रनेत्र विशालं
प्रसण्नानम नीलकएठ दयालमु ।
मृगाधीशचर्माम्बर मुएडमाल
प्रिय शंकरं सर्वनाथ भजामि ।

प्रचण्ड प्रकृष्ट प्रगल्भ परेश
मखण्ड भजे भानू कोटिप्रकाशम् ।
त्रयीशुलनिर्मुतन शुलपाणि
जजेऽहं भवानीपति भावगम्यम् । (५)
कलातीतकल्यान कल्पान्तकारी
सदा सच्चदानन्द दाता पुरारिः
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी
प्रसीद २ पभो मन्मथारि । (६)
न यावदुमानाथपादारबिन्द
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुख शन्तिसन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं । (७)
न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भो तुभ्हम् ।
जराजन्मदुःखौघतामप्हमानं
प्रभो पाहि शापाण्नमामीशं शम्भो । (८)

———

[9]

शीश गंग अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलाशी।
नन्दी भृगी नृत्य करत हैं गुण भक्तन शिव की दासी।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहें बैठें हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त सुर राग रागनी अति गासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भंवर करते हैं गुंजासी।
कल्प दुम अरू पारिजात तरू लाग रहे हैं लज्ञासो।
छहों ऋतु नित चलत रहत है पुष्प चढ़त है वर्षा सी।
देवमुनिगण की भीड़ पड़त है निगम रहत जो नितगासी।
ब्रह्मा विष्णु ध्यान धरत हैं कछु शिव हमको फरमासी।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुखराशी।
जिनको सेवा स्मरण करते टूट जाये गम की फांसी।
त्रिशूलधन जी का ध्यान निरन्तर मन लगा कर जो गासी।
कैलाशी काशी के वासी अभिनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरणों का अपना जान दर्श दीजो।
तुम तो प्रभु जी सदा सयाने अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर कंकर की विनती सुनियो।

[10]

शिव शंकर जी तेरे उपासक कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य वस्तुएं कई ढंग से लाते हैं।

धूम धाम और साज बाज से वह मन्दिर में आते हैं।
मुक्त मणि और मूल्य वस्तुएं आकर तुम्हें चढ़ाते हैं।
मैं तो एक गरीब दास हूं जो कुछ भी साथ नहीं लाया।
दृढ़ निश्चय कर मन में केवल पूजा करने को आया।
धूप दीप नैवेद्य नहीं है झांकी का शृंगार नहीं है।
और गले में पहनाने को फूलों का भी हार नहीं है।
नहीं दान है नहीं दक्षिणा जो खाली हाथ चला आया।
पूजा की विधि नहीं जानता फिर भी नाथ चला आया।
पूजा और पूजा का प्रस्तुत इसी पुजारी को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर इसी भिखारी को समझो।
मैं तो एक प्रेम का लोभी हृदय दिखाने आया हूं।
जो कुछ है बस यही पास है इसे चढ़ाने आया हूं।
चरणों पर है अर्पण तुम्हारे चाहो तो स्वीकार करो।
सब कुछ है शंकर जी तुम्हारे ठुकरा दो या प्यार करो।

[11]

(तर्ज – छोड़ गये बालम मुझे हाय अकेला छोड़ गये)

कष्ट हरो शंकर हम दुखियारे दुखियों के,
हाथ धरो शंकर हम दुखियारे दुखियों पर।
नैया डगमग डोल रही है आये न नजर किनारा,
बार-बार हम यही पुकारें तुम बिन कौन सहारा।

दीनानाथ दुःख-हर्ता हो तुम भक्तों के रखवाले,
दया दृष्टि से अपनी प्रभु जो कष्ट मिटाने वाले।
मोह माया के जाल में फंस कर जिसने तुझे भुलाया,
दान भक्ति का देकर तुम ने उसको है अपनाया।
मैं तो सेवक दीन दुखी हूं मुझ पर भी उपकार करो,
मन मेरे में जोत जला कर भवसागर से पार करो।

[12]

(तर्ज—जय अम्बे गौरी मैया जय मंगल मूर्ति मैया)

शिव शंकर भोले भाले तुम भक्तों के रखवाले। शिव०
महिमा तेरी गाऊं कैसे मुझ में इतना ज्ञान कहां।
मन मेरे में बस जाओ प्रभु माया फलाने वाले। शिव०
लाखों तुम ने ऐसे तारे मेरा कल्याण करो।
नैया मेरी बीच भंवर में आकर इसको पार करो। शिव०
जग-कर्ता जग हर्ता हो तुम, तुम सा नहीं है कोई।
सब दुनिया के जगत पिता प्रभु सबके पालनहारे। शिव०
लेकर आस प्रभु हम तेरी, शरण तेरी में आये।
करो कृपा प्रभु हम दुखियों वर मुक्ति दिलाने वाले। शिव०

[13]

तेरी शरण में आये के भोले आस किस की कीजिये।
नहीं दीख पड़ता हूं मुझे दुनिया तेरी शान का।

गंगा किनारे बैठ कर क्यों कूप का जल पीजिये।
हरगिज नहीं लायक हूं मैं सांचे तेरे दरबार का।
मेरी खता को मुआफ कर दीदार अपना दीजिये। तेरी०
पतित पावन नाम सुन कर मैं शरण तेरी पड़ा।
सुफल कर इस नाम को अपना मुझे कर लीजिये।
मिलता है ब्रह्मानन्द जिस के नाम लेने से सदा।
ऐसे प्रभु को छोड़ कर फिर कौन सा हित कीजिए।

] 14]

शम्भु भोले नाथ जी जटाधारी नाथ जी।
आये हैं हम शरण तेरी कृपा करो शिवनाथ जी।
जटा जूट से गंगा निकली चरणों नीर वहाएओ।
अंग वभूत रमा कर प्रभु जी बैठे धूनी लगाये हो।
शिव मस्तक पर चन्द्र विराजे डमरू डिम डिम बाजे हो।
कर में लेकर त्रिशूल प्रभु जी दुखियों के दुख हरते हो।
हाथ में कंकन कानों में कुण्डल गल मुण्डन की माला हो।
भक्तों पर कर दिया प्रभु जी भक्ति ला फल देते हो।
तुमको निशदिन ध्यावत है जो मनवांछित फल पाते हैं।
पाप मिटा कर उनके मन से चरण कमल में रखते हो।

———

शिव जी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।
सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं,
शिवोहं शिवोहं शिवो० (१)

जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलावे,
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं;
शिवोहं शिवोहं शिवो० (२)

अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया;
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया,
सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं,
शिवोहं शिवोहं शिवो० (३)

है तारों से तारों में प्रकाश जिसका,
है चन्द्र वा सूर्य में है वास जिसका।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं,
शिवोहं शिवोहं शिवो० (४)

श्री रामचन्द्र जी की स्तुति

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी,
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।

लोचन अभिरामा ननु घनशामा निज आयुध भूजधारी,
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धू खरारी।

कह दोऊ कर जोरी अस्तुति तोरि कहे विधि करो अनन्ता,
माया गुण ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भन्नता।

करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहि श्रुत सन्ता,
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रकट भये श्रीकन्ता।

ब्रह्माण्ड निकाया निर्गिन माया रोम रोम प्रति वेद कहे,
मर उर सो वासी यह उपहासो सुनत धिर मति थिर न रहें।

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित्र बहुत विधि कीन चहें,
कहि कथा सुनाई मातु बुझाइ जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।

माता पुनि बोली सो पति डोली तजहु तात यह रूपा,
कीजे शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा।

सुनि वचन सुजाना रोदत ठाना है बालक सुर भूपा,
यह चरित जो गावहि हरिपद पावे ते मन परहि भवकूपा।

दोहा—विप्र धेनु सुर सन्त हित लिन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित मही तन माया गुण गौपार।

———

शिव जी की आरती

जय गिर्जापति दीन दयाला करत सदा भगतन प्रतिपाला,
दुष्ट सकल मोहें नित सतावे भरमत रहु मोहे चैन न आवे।
त्राहि त्राहि दीनानाथ पुकारो आयो मुझ पर संकट भारी,
ले त्रिशूल शत्रु को मारो संकट से मोहे आन उभारो।
शंकर तुम हो संकट नाशक विघ्न विनाशक मंगल कारण,
रणिया जो कोई होवे हितकारो पाठ करे सो पावन हरि।
जो कोई पाठ करे मन लाई तब पर होत है आप सहाई,
भक्त जिनके इच्छा दाई जो मन वांछित सो फल पाई।
पतित पावन नाम तिहारो जो चाहें पावन हारो,
जगत पिता भी नाम तिहारो जो कोई जाये चरण सुधारो।
जय गिर्जापति दीन दयाला करत सदा भगतन प्रतिपाला।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ १
मातङ्गचर्माम्बरभूषणाय, समस्तगीर्वाणगणार्चिताय ।
त्रलोक्यनाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥ २
शिवामुखाम्भोजविकासनाथ, दक्षस्य यज्ञप्यविनाशकाय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥ ३
वसिष्ठकुम्भोदवगौतमादि, मुनिन्दवन्धाय गिरीश्वराय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकराय नमः शिवाय ॥ ४
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
नित्याय शर्वायनिजनाय, तसमैयकाराय नमः शिवाय ॥ ५

ॐ त्र्यम्बकं युजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव वन्धनानमृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥